किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए मिलकर बनाएं कार्ययोजना

सरसों अनुसंधान में वैज्ञानिक गोष्ठी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय में वैज्ञानिक, कृषि अधिकारी एवं किसानों की गोष्ठी हुई। गोष्ठी को सम्बोधित करते कृषि अनुसंधान परिषद के सचिव डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सभी अनुसंधान संस्थाओं, कृषि विश्वविद्यालयों, राज्य के कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संस्थाओं आदि को मिलकर कार्य योजना बनानी होगी। उन्होंने कहा कि किसानों के विकास एवं उनकी आमदनी दुगुनी करने के लिए गुणवत्ता बीजों की उपलब्धता एवं आदानों की आपूर्ति सुनिश्चित करने और सही अनुसंधान तकनीकों को सही समय पर किसानों तक पहुंचाने के लिए सभी विभागों को मिलकर अग्रिम रणनीति बनानी चाहिए। निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने सरसों अनुसधांन की उपलब्धियां एवं किसानों के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उपनिदेशक देशराज सिंह, राजस्थान राज्य बीज निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक सीएल. यादव, कृषि अनुसधांन उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमर सिंह एवं प्रगतिशील किसान हरभान सिंह, गोपाल सिंह, रामभरोसी, रूपकिशोर आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

भरतपुर. गोष्ठी को संबोधित करते वक्ता।

नि:शुल्क प्रशिक्षण तीन से

भरतपुर. पंजाब नेशनल बैंक की ओर से संचालित पीएनबी ग्रामीण प्रशिक्षण संस्थान में ब्यूटी पार्लर का निशुल्क प्रशिक्षण तीन अक्टूबर से आयोजित किया जाएगा। आरसेटी निदेशक के अनुसार इसके लिए महिलाए 26 सितम्बर को सुबह दस बजे से संस्थान में आवेदन कर सकती हैं।

सभी संस्थानों को मिलकर बनानी चाहिए कार्य योजना

वैज्ञानिक, कृषि अधिकारी व किसानों से संवाद में बोले अधिकारी

भरतपुर| सरसों अनुसंधान निदेशालय में सोमवार को हुए कार्यक्रम में वक्ताओं ने किसानों की आमदनी बढाने के लिए सभी अनुसंधान संस्थाओं को कार्य योजना बनाकर काम करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप किसानों को तकनीकी पैकेज दिया जाना चाहिए। ताकि कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कृषि बाजार, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना आदि किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। इन योजनाओं का फायदा लेने के लिए किसानों को भी आगे आना होगा। किसानों को आमदनी बढाने के लिए अपने संसाधनों, प्रथा एवं रुचि के अनुसार बागवानी, पशुपालन, बकरी पालन, भेड़ पालन आदि कृषि आधारित व्यवसायों को अपनाना चाहिए। निदेशक डॉ. पीके राय ने सरसों अनुसंधान की उपलब्धियां एवं किसानों के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उपनिदेशक देशराज सिंह, राजस्थान राज्य बीज निगम के क्षेत्रिय प्रबंधक सीएल यादव, उपकेंद्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह, कृषि कॉलेज के डॉ. अमर सिंह आदि उपस्थित थे।

भरतपुर. किसानों को बीज किट वितरित करते अधिकारी।

कम पानी में सरसों की पैदावार बढ़ाएंगे : महापात्र

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सचिव डॉ. त्रिलोचन से बातचीत

भरतपुर | राजस्थान में कम बरसात में बुवाई करना सबसे बड़ी चुनौती होती है किसानों के लिए। लेकिन जल्द ही हमारे संस्थान इस चुनौती का हल भी निकालने में सफल हो सकेंगे। यह बात सोमवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय में आए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग महानिदेशक व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सचिव डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कही। उन्होंने कहा कि राजस्थान में बारिश व ऋतु के अनुसार मौसम में बहुत बदलाव आ रहा है। अब सरसों अनुसंधान के साथ ही कृषि संस्थानों का एक ही शोध चल रहा है कि कम बरसात में भी किस तरह फसल उत्पादन को बढ़ाया जा सके। वर्ष 1950 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 50 मिलियन टन था करीब 273 मिलियन टन हो गया। जबकि वर्ष 2015-16 की तुलना में 2016-17 मे दलहन का उत्पादन पांच गुणा तक बढ़ गया है।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र

कुछ सालों में सफेद रोली रोग मुक्त होगी सरसों की फसल

डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने बताया कि किसानों के सामने एक और बड़ी परेशानी है सरसों में सफेद रोली का रोग लगना। उसमें रसायनों का उपयोग कर उसके निराकरण की कोशिश की जाती है। नुकसान भी उठाना पड़ जाता है। लेकिन अगले कुछ सालों में ऐसी नई किस्म निकाली जाएगी कि यह रोग ही नहीं रहेगी। मतलब यह है कि कुछ साल बाद सफेद रोली रोग मुक्त फसल ही पैदा होगी।

मृतका का दाह-संस्कार करा दिया। भी किया लेकिन उनका कोई सुराग गया, जिस पर चोर उसे छोड़

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक से पत्रिका की बातचीत

सरसों की जीएम किस्म अभी नहीं होगी जारी

पैदावार बढ़ाने के लिए सरसों में ड्रिप सिंचाई के विकल्प पर भी हो रहा विचार

भरतपुर @ पत्रिका. कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि अभी सरसों की जीएम किस्म को बाजार में लाने की कोई योजना नहीं है।

सरकार इसके गुण-अवगुणों पर मंथन कर रही है और सभी पक्षों को देखने के बाद ही इसे किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा। सेवर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय में वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, किसानों की बैठक लेने आए डॉ. महापात्र ने राजस्थान पत्रिका के साथ बातचीत में कही। प्रस्तुत है उनके बातचीत के प्रमुख अंश:-

पत्रिका: सरसों अनुसंधान के क्षेत्र में क्या नया हो रहा है?

डॉ. महापात्र: सरसों की पैदावार कैसे बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। अभी तक के प्रयासों से दस से बीस प्रतिशत ही पैदावार वृद्धि में सफलता मिली है। हमारा लक्ष्य है कि इससे बीच से 25 प्रतिशत तक पहुंचाया जाए।

पत्रिका: इसके लिए क्या योजना है?

डॉ. महापात्र: सरसों कम पानी में पैदा होने वाली फसल है, लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि बारिश साल दर साल कम होती जा रही है। हम इस दिशा में काम कर रहे हैं कि पानी की बेहद कमी की स्थिति में सरसों की अच्छी पैदावार ले सकें। इसके लिए सरसों में ड्रिप सिंचाई पर मंथन चल रहा है। अभी सरसों में फ्लड इरीग्रेशन चल रहा है जिसमें काफी पानी इस्तेमाल हो रहा है।

पत्रिका: सरसों में जीएम किस्म के बारे में क्या प्रगति हो पाई है?

डॉ. महापात्र: अभी तक सरसों की जीएम किस्म दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से विकसित की गई है। सरसों की संकर किस्म से ज्यादा पैदावार की संभावना तो है, लेकिन उसको लेकर कुछ लोगों ने आशंकाएं भी व्यक्त की है। अभी वह रिलीज नहीं है। कई लोगों ने सरकार को नेगेटिव फीडबैक दिया है। जबतक सबकुछ साफ नहीं होगा, किसानों के पास यह बीज नहीं पहुंचेगा।

पत्रिका: आपने कहा कि

किसान की आमदनी दोगुनी क
के लिए हर संभव प्रयास कर
हैं, लेकिन जमीनी हालात अ
है। किसानों की जोत छोटी
सिंचाई के लिए पानी नहीं
फसलों में मौसमी बीमारियों
प्रकोप बढ़ रहा है।

डॉ. महापात्र: हम सदियों
खेती करते चले आ रहे ह
आजादी से बाद से खेती
काफी बदलाव आया है। बि
खेती के हमारी खाद्य सुर
संभव नहीं है। इसमें हम कै
बदलाव लाएं, बदलाव क
दिशा क्या होगी इस पर सरक
में चर्चा चल रही है। आप
समझते हैं बड़े बदलाव में सम
लगता है।

संक्षिप्त समाचार

किसानों के विकास के लिए करना होगा काम

न्यूज सर्विस/नवज्योति, भरतपुर

कृषि के समग्र विकास एवं किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सभी अनुसंधान संस्थाओ, कृषि विश्वविद्यालय राज्य के कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संस्थाओं आदि को मिलकर कार्य योजना बनानी चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप किसानों को तकनीकी पैकेज दिया जाना चाहिए ताकि कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हो। वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से विकसित तकनीके किसानों के परिश्रम से जब खेतों में पहुंची तो कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हुई। यह बात कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने सोमवार को सरसों अनुसधांन निदेशालय में वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, किसानों आदि को सम्बोधित करते हुए कही। वर्ष 1950 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 50 मिलियन टन था जो सभी के प्रयासों से करीब 273 मिलियन टन हो गया। सरकार की सकारात्मक नीतियों एवं किसानों की मेहनत से वर्श 2015-16 की तुलना में 2016-17 मे दलहन का उत्पादन पांच गुणा तक बढ़ गया है।

'किसानों के विकास के लिए सभी संस्थाओं को मिलकर कार्य करना होगा'

भरतपुर, (निसं)। कृषि के समग्र विकास एवं किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सभी अनुसंधान संस्थाओं, कृषि विश्वविद्यालयों, राज्य के कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संस्थाओं आदि को मिलकर कार्य योजना बनानी चाहिए।

विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप किसानों को तकनीकी पैकेज दिया जाना चाहिए ताकि कृषि उत्पादन में बढोत्तरी हो। वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से विकसित तकनीके किसानों के परिश्रम से जब खेतों में पहुंची तो कृषि उत्पादन में बढोत्तरी हुई। यह बात डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने आज सरसों अनुसंधान निदेशालय में वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, किसानों आदि को सम्बोधित करते हुये कही।

उन्होंने कहा कि वर्ष 1950 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 50 मिलियन टन था जो सभी के प्रयासों से करीब 273 मिलियन टन हो गया। सरकार की सकारात्मक नीतियों एवं किसानों की मेहनत से वर्ष 2015-16 की तुलना में 2016-17 में दलहन का उत्पादन पांच गुणा तक बढ़ गया है। किसानों के विकास एवं उनकी आमदनी दुगुनी करने के लिए गुणवत्ता बीजों की उपलब्धता एवं आदानों की आपूर्ति सुनिश्चित करने और सही अनुसंधान तकनीकों को सही समय पर किसानों तक पहुंचाने के लिए सभी विभागों को मिलकर अग्रिम रणनीति बनानी चाहिए।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि राष्ट्रीय कृषि बाजार, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, आदि किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। इन योजनाओं का फायदा लेने के लिए किसानों को भी आगे आना होगा। किसानों को आमदनी बढाने के लिए अपने संसाधनों, प्रथा एंव रूचि के अनुसार बागवानी, पशुपालन, बकरी पालन, भेड़ पालन, आदि कृषि आधारित व्यवसायों को अपनाना चाहिये। उन्होंने कहा कि किसान कृषि वैज्ञानिकों पर विश्वास करते है इसलिए मेरा गांव मेरा गौरव योजना की शुरूआत की गई जिसके अर्न्तगत 13000 से ज्यादा गांवों में कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से संवाद किया और करीब 3.5 लाख से ज्यादा किसानों से जुडकर उन्हें लाभान्वित किया। उन्होने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलायें और विकसित तकनीकों का व्यापक प्रचार-प्रसार करे।

इस अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक योगेश शर्मा, उपनिदेशक देशराज सिंह, राजस्थान राज्य बीज निगम के क्षेत्रिय प्रबंधक सी. एल. यादव, कृषि अनुसधान उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अमर सिंह एवं प्रगतिशील किसान हरभान सिंह, गोपाल सिंह, रामभरोसी, रूपकिशोर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने किसानों को प्रदर्शन के लिए बीज कीट का भी वितरण किया।

किसानों के विकास के लिए मिलकर कार्य करना होगा

सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि।

अमर उजाला ब्यूरो

भरतपुर।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि कृषि के समग्र विकास , किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सभी अनुसंधान संस्थान, कृषि विश्वविद्यालय , राज्य के कृषि विभाग , कृषि विज्ञान केन्द और गैर सरकारी संस्थाओं आदि को मिलकर कार्य योजना बनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप किसानों को तकनीकी पैकेज दिया जाना चाहिए जिससे कृषि उत्पादन में बढोत्तरी हो। वैज्ञानिकों के सक्रिय प्रयास से विकसित तकनीके किसानों के परिश्रम से जब खेतों में पहुंची तो उत्पादन में बढोत्तरी हुई।

सचिव, कृषि अनुसंधान ,शिक्षा विभाग ,और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिशद, नई दिल्ली महापात्रने यहां सरसों अनुसधांन निदेषालय में आयोजित वैज्ञानिक कृषि अधिकारी और किसानों से हुए संवाद कार्यक्रम में बोलते कहा कि वर्ष 1950 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 50 मिलियन टन था जो सभी के प्रयासों से करीब 273 मिलियन टन हो गया। सरकार की सकारात्मक नीतियों , किसानों की मेहनत से वर्ष 2015-16 की तुलना में 2016-17 मे दलहन का उत्पादन पांच गुणा तक बढ गया है।

त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि राष्ट्रीय कृषि बाजार, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, आदि किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। इन योजनाओं का फायदा लेने के लिए किसानों को भी आगे आना होगा। किसानों को आमदनी बढ़ाने के लिए अपने संसाधनों, प्रथा , रूचि के अनुसार बागवानी, पशुपालन, बकरी पालन, भेड़ पालन, आदि कृषि आधारित व्यवसायों को अपनाना चाहिये। उन्होंने कहा कि किसान कृषि वैज्ञानिकों पर विश्वास करते हैं। इसलिए मेरा गांव मेरा गौरव योजना की शुरूआत की गई, जिसके अंतर्गत 13000 से ज्यादा गांवों में कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से संवाद किया और करीब 3.5 लाख से ज्यादा किसानों से जुड़कर उन्हें लाभान्वित किया।

13000 से ज्यादा गांवों में कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से संवाद किया

कार्यक्रम में सरसो अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने सरसों अनुसधांन की उपलब्धियां, और किसानों के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। कृषि विभाग के संयुक्त निदेषक योगेश शर्मा, उपनिदेशक देशराज सिंह, राजस्थान राज्य बीज निगम के क्षेत्रिय प्रबंधक सी. एल. यादव, कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह, कृषि महाविद्यालय के डॉ. अमर सिंह , प्रगतिशील किसान हरभान सिंह, गोपाल सिंह, रामभरोसी, रूपकिशोर ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने किसानो को प्रदर्शन के लिए बीज कीट का भी वितरण किया। डॉ. महापात्र ने निदेशालय द्वारा आयोजित स्वच्छता कार्यक्त्रम में भी भाग लिया।

किसानों के विकास के लिए सभी संस्थाओं को मिलकर कार्य करना होगा : डॉ. त्रिलोचन महापात्र

भरतपुर, (मनोज शर्मा): कृषि के समग्र विकास एवं किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सभी अनुसंधान संस्थाओ, कृषि विश्वविद्यालय राज्य के कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संस्थाओं आदि को मिलकर कार्य योजना बनानी चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप किसानों को तकनीकी पैकेज दिया जाना चाहिए, ताकि कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से विकसित तकनीक किसानों के परिश्रम से जब खेतों में पहुंची तो कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई। यह बात कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने सोमवार को सरसों अनुसधांन निदेशालय में वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, किसानों आदि को सम्बोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि वर्ष 1950 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 50 मिलियन टन था जो सभी के प्रयासों से करीब 273 मिलियन टन हो गया। सरकार की सकारात्मक नीतियों एवं किसानों की मेहनत से वर्ष 2015-16 की तुलना में 2016-17 मे दलहन का उत्पादन पांच गुणा तक बढ़ गया

किसानों को बीज किट वितरित करते डॉ. त्रिलोचन महापात्र।

है। डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि राष्ट्रीय कृषि बाजार, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना आदि किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। इन योजनाओं का फायदा लेने के लिए किसानों को भी आगे आना होगा। उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाए और विकसित तकनीकों का व्यापक प्रचार-प्रसार करे। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि बदलती परिस्थितियों के अनुरूप उच्च तापमान सहनशील, सूखा सहनशील आदि किस्मों के विकास कार्यक्रमों को गति प्रदान करें। जलवायु परिवर्तन के कारण कई नई समस्याएं कृषि में आ रही है। नई चुनौतियों के अनुसार अनुसंधान किए जा रहा। उन्होंने प्रगतिशील किसानों से आग्रह किया कि वे अनुसंधान संस्थाओं एवं आम किसानों के बीच कड़ी का कार्य करे।

इस अवसर पर निदेशालय के निदशक डॉ. पी.के.राय ने सरसों अनुसधांन की उपलब्धियां एवं किसानों के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस मौके पद योगेश शर्मा, देशराज सिंह, सी.एल.यादव, डॉ. उदयभान सिंह, डॉ. अरमसिंह, हरभान सिंह, गोपाल सिंह, रामभरोसी, रूपकिशोर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने किसानों को प्रदर्शन के लिए बीज कीट का भी वितरण किया। डॉ. महापात्र ने निदेशालय की ओर से आयोजित स्वच्छता कार्यक्रम में भी भाग लिया। उन्होंने वैज्ञानिक और अधिकारियों से संवाद करते हुए कहा कि सभी मिलकर कृषि विकास के लिए कार्य करे।